क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहारादून

अंक 1: मई 2021

मुट्ठी में सपने लिए, मन में आशा,
हृदय में हौसला लिए, बोलो आत्मविश्वास की भाषा|
क्या नहीं रोका ऊँचे पर्वतों ने नदी का रास्ता?
क्या नहीं रखी, फिर भी उसने अपने प्रयास में आस्था|
उठो, कदमों की चाल को बढ़ाओ,
बहुत चट्टानों का सामना करना है|
जीवन के इस कारवें को आगे बढ़ाकर,
कुछ हासिल करना है|

साभार :
देविका अग्रवाल, अरुषि झुंझुनवाला

संपादिका की कलम से

जीवन एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया का नाम है जिसमें सुख-दुख, आशा-निराशा, उतार-चढ़ाव, कभी स्थायी और कभी अस्थायी भूमिका निभाते हैं। कई बार हमें मंज़िल तुरंत मिल जाती है पर कई बार सफलता की ओर हमारे कदम धीमे हो जाते हैं और इस प्रकार हम लक्ष्य की ओर आशंकित होकर देखते हैं। ज़रा सोचिये, क्या नन्हीं सी चींटी विशालकाय पर्वत को देखकर डर जाती है? क्या अंधकार के अस्तित्व से डर, चन्द्रमा आकाश में चमकना छोड़ देता है? क्या बड़ी सी चट्टान आने पर नदी आगे बढ़ना छोड़ देती है? क्या नाविक सागर की लहरों को उठते देख, नाव को समुद्र में ले जाना भूल जाता है? नहीं ना...। सफलता के उस क्षितिज को पार करने के लिए आत्म निश्चय, आत्म अनुशासन और अपनी मेहनत पर भरोसा रखने की ही आवश्यकता होती है।

मैं इस वर्ष का 'क्षितिज' संस्करण उन सभी व्यक्तियों को समर्पित करना चाहूँगी जो इस कठिन समय में भी अपनी मुस्कुराहट, जीने की इच्छा, सकारात्मक सोच तथा मानवीय मूल्यों को ताक पर रखने को तैयार नहीं हैं। हम इस जिजीविषा को सलाम करते हैं और उम्मीद करते हैं कि जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश को बादल बहुत देर तक छुपा नहीं सकते, उसी प्रकार नाउम्मीदी, आशा और प्रसन्नता को हमसे बहुत देर तक दूर नहीं रख पाएगी। हम सूर्य की तरह प्रखर होकर उभरेंगे और फिर से अपनी सामान्य दिनचर्या में लौट आएंगे।

आशा करती हूँ कि 'क्षितिज 2021' का यह पहला अंक आपको पसंद आएगा और आप सबका प्रेम इसे प्राप्त होगा।
धन्यवाद।

अग्रीमा चौधरी

इस अंक में आगे है :-

पृष्ठ 1: आवरण पृष्ठ

पृष्ठ 2: संपादिका की कलम से

पृष्ठ 3: कान्हा और कोरोना

पृष्ठ 4: कश्मीरी गुड़िया

पृष्ठ 5: चलती का नाम ज़िंदगी + रंग निराले!

पृष्ठ 6: कभी अलविदा ना कहना..

पृष्ठ 7: हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पृष्ठ 8: मन की पुकार + मेरा क्षितिज

पृष्ठ 9: समय की कदम ताल

पृष्ठ 10: वैल्हम के नए परिंदे + आज कुछ तूफानी करते हैं!

पृष्ठ 11: आवाज़ उठाओ + नारी हूँ मैं

पृष्ठ 12: ब्लैक लाइव्स मैटर

पृष्ठ 13: वैल्हम की प्रवेश परीक्षा + आत्ममंथन

पृष्ठ 14: घूमता आईना

पृष्ठ 15:'ब्रैंड्स' का मोहजाल

पृष्ठ 16: वैल्हम पहेली + संपादकीय मंडल

कान्हा और कोरोना

मैय्या मोरी, मोहे ये लॉकडाउन नहीं भायो,
भोर गयी, संध्या आई, पर मैं खेलन नहीं जायो,
मोबाइल, इन्स्टा, मैसेंजर पर,
चैट करत-करत, मैं थकी जायो,
मैय्या मोरी, मैं संगी संग,
आमने-सामने कब बतियायो?
मुख में प्रति पल मास्क लगायो, मैं वंशी कैसे बजायो?

मैय्या मोरी, मोहे ये लॉकडाउन नहीं भायो,
गुरूजी मोहे आश्रम से घर भिजवायो,
ऑनलाइन क्लासेज में पढ़त-पढ़त,
तेरो कान्हा बोर हो जायो,
क्रिकेट, फुटबॉल, स्विमिंग पूल,
मोहे याद बहुत आवत,
मैय्या, तू भी मोहे सतायो|
माखन-मिश्री भी धो-धोकर मोहे खिलायो|

कान्हा,तू क्यों अपना ही रोना रोवत है?
मैय्या-बाबा का भी हाल बुरा,
लॉकडाउन में 'मेड' नहीं आवत,
मैय्या बर्तन धोवत-धोवत थकी जायो,
बाबा भी घर झाड़त-बुहारत दुखी हो जावत,
मेरे कान्हा, मैय्या को तुम अब ना सतायो,
घर के कामों में तुम भी हाथ बटायो,
यमुना तट पर सुदामा ने पुलिस को डंडो खायो|
सुन कान्हा- कोरोना सबको बहुत सतायो,
लल्ला मोरे, मोहे भी ये लॉकडाउन नहीं भायो|

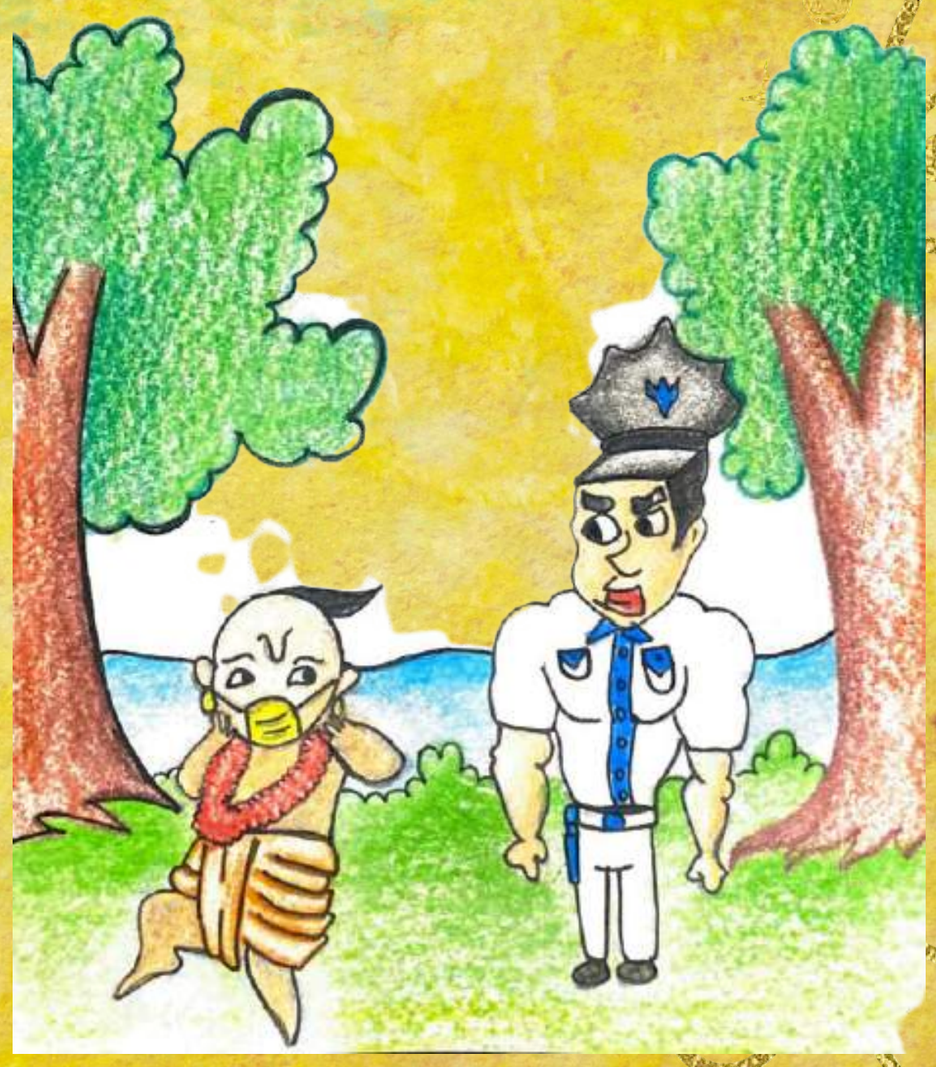

-श्रीमती कुसुम डंडोना एवं श्रीमती सीमा सिधवानी
(हिंदी एवं नाट्य विभाग)

कश्मीरी गुड़िया

सोनाली शीशे के सामने खड़ी होकर अपनी वर्दी को निहार रही थी। अपनी बेटी और अपने पति की आँखों में उसे गर्व की भावना साफ़ नज़र आ रही थी| उसका सपना था कि वह अपने देश के लिए कुछ करे| एक फोन आया और उसकी आँखें चमकने लगी|

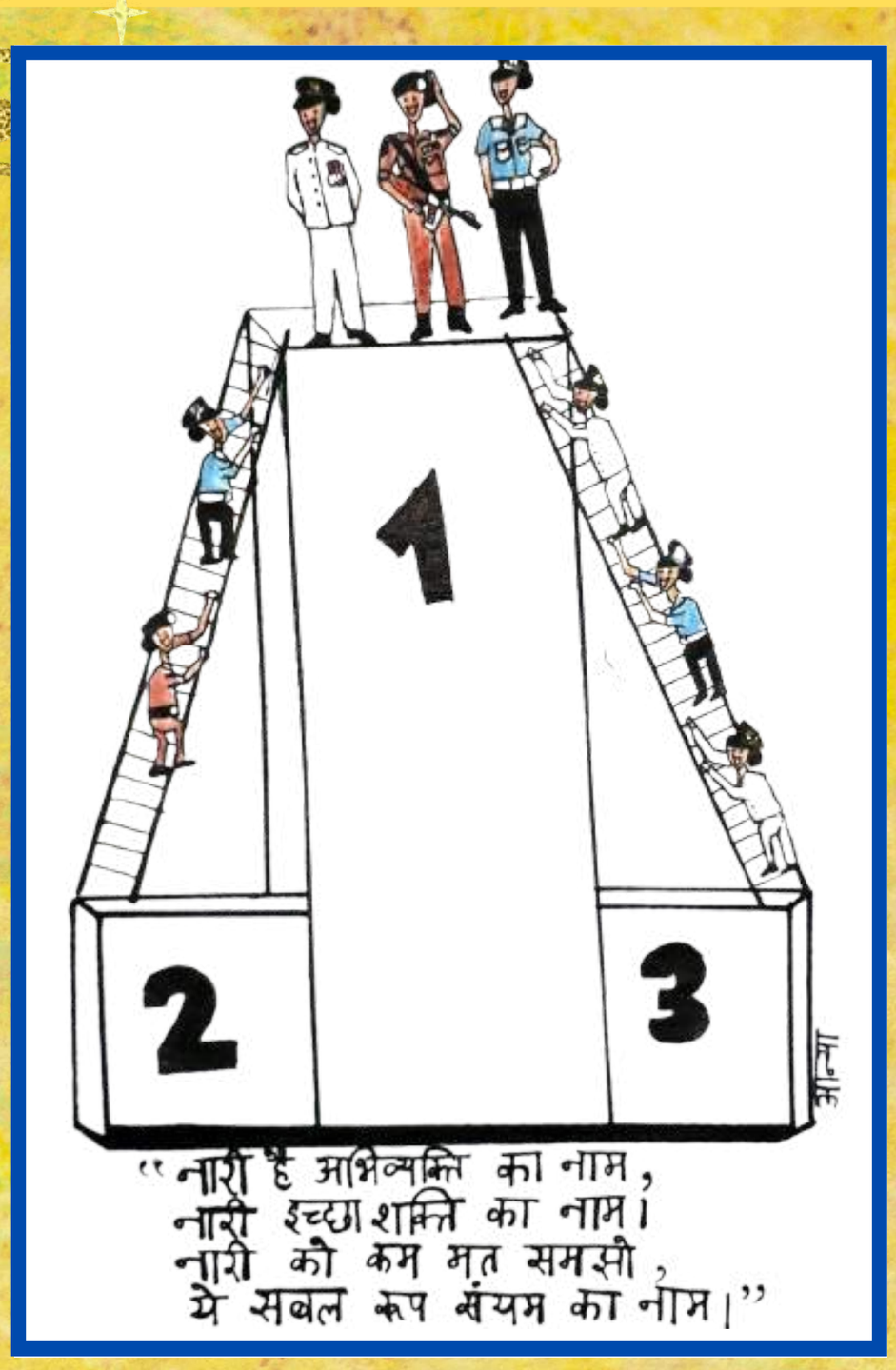

उसने तैयार होकर अपने परिवार के लिए खाना बनाया, मंदिर में पूजा की, अपने माता-पिता का आशीर्वाद लिया और अपने पति और बेटी को गले लगाने के बाद वह गाड़ी में बैठकर जम्मू की ओर निकल पड़ी। सात घंटे के लंबे सफर के बाद दल-बल सहित भारत के बॉर्डर के बेस पर पहुँच गई|

उनकी लड़ाई कश्मीर में छिपे कुछ आतंकवादियों से थी। 15 आंतकवादी कश्मीर के एक खंडित घर में छिपे हुए थे। भारत के सिपाहियों को रात में उन पर हमला करना था। सोनाली बहुत बेचैन हो रही थी, उसने अपनी जेब से पति और बेटी की फोटो निकाली और क्षणभर के लिए उन्हें देखा। उसकी बेटी कुछ ही दिनों में चार साल की होने वाली थी। वह चाहती थी कि सोनाली उसके लिए कश्मीर से एक गुड़िया लाए। रात को सभी सिपाही अपने हथियार लेकर उस खंडित घर के पास चुपचाप पहुँचे। आतंकवादियों ने कश्मीर के निवासियों का जीना मुश्किल किया हुआ था। हर ओर हिंसा और डर का साया छाया हुआ था। भारतीय सिपाहियों ने उनका अड्डा चारों तरफ से घेर लिया था। सोनाली ने भारत माता का नाम लिया और हमला करने की आज्ञा दी। गोलियों और दर्द भरी चीखों से घर गूँज गया। ज़मीन और दीवारें खून से रंग गई| अत्यंत कठिनाई से उन्होंने आतंकवादियों को मारने में सफलता प्राप्त की। सभी अपनी जीत का उत्साह मना रहे थे कि तभी सोनाली ने देखा कि एक आतंकवादी ने अपनी ज़ख्मी बाजू से ग्रिनेड की रस्सी खींच दी।अपने सभी साथियों को सुरक्षित घर से बाहर धकेलते हुए सोनाली ने घर का दरवाजा बंद कर लिया| 'जय हिन्द' कहा और कुछ ही क्षणों में वह राख में तब्दील हो गई।

घर पर उसकी बेटी और उसका पति उसका इंतजार कर रहे थे| दूर से उन्हें एक फौजी गाड़ी आती दिखाई दी। सोनाली की बेटी अपने चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान लिए उस गाड़ी की ओर दौड़ी। गाड़ी का दरवाज़ा खुला तो उसमें से एक अफसर निकले जिनके दाहिने हाथ में एक खूबसूरत मटका और बाएँ हाथ में एक सुंदर कश्मीरी गुड़िया थी और पंक्तिबद्ध खड़े होकर सभी सिपाही भारत माता की जय-जयकार कर रहे थे|

-इनायत कुकरेजा (कक्षा 10)

चलती का नाम ज़िंदगी

एक छोटा दरिया लंबी यात्रा करके सागर बन जाता है,
कीचड़ में पले हुए जल को शुद्ध करने का जज़्बा रखता है|
उसे न जाने कितने पत्थरों से सामना करना पड़ा,
कितनी देर तपकर आगे अपना सफर तय करना पड़ा|
कर्मठ रहकर उसने भी धैर्य से काम लिया,
आत्मविश्वास रखकर निरंतर प्रयास किया|
तत्पश्चात अनगिनत कंकड़ उसकी गहराई को न परास्त कर सके,
झील से समुद्र बनने के जज़्बे को उससे छीन न सके|

वह परिंदा बनो जो ऊँची उड़ान भरता है,
निडर होकर आकाश की असीमता को चुनौती देता है|
इतना विशाल मैदान उसे बिलकुल नहीं डराता,
बल्कि अपने पंख फैलाने का सुनहरा अवसर देता है|
उसके अंदर की आग सूर्य की रोशनी न बुझा पाती,
वह नन्ही उड़ानों से अपना प्रभावशाली भविष्य बनाती|
अन्य पक्षियों के प्रति बधिर बनकर वह लक्ष्य पर ध्यान देती,
एक मात्र केवल अपने ही सहज बोध पर भरोसा रखती|

ज़िंदगी रेलगाड़ी के डब्बों की भांति है,
कड़ी से कड़ी जुड़कर आगे बढ़ती है|
एक डब्बे के पटरी से सरकने पर,
पूरी गाड़ी शक्ति खो देती है|
फिर क्यों रोकें इस वाहन को,
जब ज़िंदगी एक सुहाना सफर है|
और रेलगाड़ी वही सर्वश्रेष्ठ है, जो आगे बढ़ती रहे,
क्योंकि चलती का नाम ही तो ज़िंदगी है|

-देविका अग्रवाल (कक्षा 11)

रंग निराले!

इंद्रधनुष के रंगों जैसा,
चंचल चितवन मन है ऐसा।
हर रंग की अपनी परिभाषा,
कुछ देती आशा तो कुछ निराशा!
श्वेत वर्ण शांति दर्शाता,
मन को पवित्र कर जाता।
लाल लहू है, लाल गुलाब,
उत्तेजना व खतरों का सैलाब।
साथ ही प्यार का जगाये ख्वाब।
शिव शंकर है नील कंठ,
कृष्ण का भी नील वर्ण।
समंदर नीला, आसमान नीला,
मन में जगाये शीतलता का मेला!
हरा भरा है यह जग सारा,
प्रगतिशील होने का मार्गदर्शक हमारा!
पीला है प्रतीक शुभ आरम्भ का,
केसरिया, साहस और धैर्य का।
गुलाबी की तो बात निराली,
यह सिखाता स्त्रीत्व की रखवाली।
रंगों में एक रंग काला,
जग में उदासी फैलाने वाला।
पर यह दो नैना भी काले,
जिनसे हर रंग हम देखने वाले!
रंग निराले, रंग निराले!

-आशी ढंढारिया (कक्षा 8)

कभी अलविदा ना कहना...

रीटा वासुदेव

गीता शर्मा

विनोद वच्छानी

ममता राय

प्रभा नवानी

मंजू भट्ट

रीमा पंत

आँचल सोंधी

पीताम्बर दत्त

https://drive.google.com/file/d/1uQ9ws92pDr2xGTkcD4l3u7SS5LHiaZLH/view?usp=sharing

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

इंटरनेट पर समाचार देखते हुए मेरी नज़र कुछ 'स्निपेट्स' पर पड़ी। प्रतिष्ठित साक्षात्कारकर्ता ओप्रा विंफ्रे ने ब्रिटेन के राज परिवार से हाल ही में निष्कासित हुए, हैरी और मेघन मार्कल के साथ साक्षात्कार किया था। जब मैंने उसे देखा तो मैं विचलित हो गयी और मेरे मन में कई विचार उठने लगे।

पहले भी ओप्रा, मेघन का साक्षात्कार करना चाहती थी लेकिन उस समय, मेघन ब्रिटेन की राज परिवार की सदस्या थी और ऐसा कोई निर्णय उसके हाथ में नहीं था। मेघन मार्कल एक कामयाब अभिनेत्री रही हैं परंतु शादी के पश्चात उन्होंने अभिनय छोड़ दिया। मेघन मार्कल स्वतन्त्र निर्णय लेनी वाली एक आत्मनिर्भर महिला थीं परन्तु विवाह के पश्चात वह अपने लिए भी निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र नहीं रहीं। मेघन के अफ़्रीकी मूल की होने के कारण राज परिवार के किसी सदस्य ने पूछा कि “उनके बच्चे का रंग कितना काला होगा?” राज परिवार में रहते हुए वह कई बार मानसिक दबाव की शिकार हुई। उन्होंने मनोचिकित्सक से मिलने का आग्रह किया पर उन्हें इजाज़त नहीं दी गई क्योंकि उनका मनोचिकित्सक से मिलना राज परिवार की गरिमा को कलंकित कर देता। अंततः मेघन तथा प्रिंस हैरी ने राज भवन छोड़कर एक सामान्य जीवन जीना स्वीकार किया।

साक्षात्कार के इन 'स्निपेट्स' को देखकर मन में कई सवाल उठे। क्या धन- सम्पत्ति से सम्पूर्ण घरों में महिलाएँ सुरक्षित हैं? क्या दुनिया के उच्च परिवार भी रंग आधारित भेदभाव से मुक्त हैं? क्या आम आदमी ने राजसी गौरव को आज भी ईश्वर तुल्य माना हुआ है? क्या धन-संपदा आत्म सम्मान से बढ़कर है? क्या ब्रिटेन का राज परिवार वाकई समाज का आदर्श माना जा सकता है? क्या हैरी तथा मेघन समाज में परिवर्तन का प्रतीक हैं?

-हिमांशी गुप्ता (कक्षा 11)

मन की पुकार

यह दुनिया नहीं समझने वाली किसी को,
यह मानेगी वही, जो मानना होगा इसको|
हमें पड़ता न कोई फरक,
इसकी सोच ही है बेड़ा गरक|
लाखों लोग गँवा बैठे हैं, खुद को इसकी सोच व बोझ के तले
न कोई समझा है न कोई समझेगा,
बोलने को बोल देते हैं कि तुमको तुमसे बेहतर जानते हैं,
पर क्या वाकई वह "कुछ" जानते है?
हम बच्चे हैं कोई मिट्टी का खिलौना नहीं,
दूसरों के सपनों को पूरा करने का पैमाना नहीं|
बोलते हैं, "हमने कहाँ प्रेशर दिया?",
पर घडी-घडी सिर्फ 'अंकों' का महत्त्व बताते हैं|
हम सिर्फ बच्चे हैं,
न कुछ ज़्यादा चाहते हैं,
बस अगर गिरे, तो तानों की जगह आपका सहारा चाहते हैं|
माना बहुत कमियाँ हैं हम में,
पर दिल से हम भी, हमें तराशने वाला चाहते हैं|

-मनस्वी पंत (कक्षा 11)

मेरा क्षितिज

कश्ती लेकर निकली मैं,
मैं आऊँगी, मेरा इंतजार करना|
ओ सागर! तुमसे नहीं,
उस क्षितिज से मिलने आई हूँ।

मैं निकली थी इस आस में,
उस सूर्य को छूकर आती हूँ|
पर क्या उस सूर्य की झलक पाने को,
सागर को झुठला पाऊँगी?

नहीं सागर, तुम में ही समाकर,
उस सूर्य के प्रतिबिंब को निहार पाऊँगी|
और इस तरह दोनों को छूकर,
अपना क्षितिज बनाऊँगी|

-कशिश चौधरी (कक्षा 8)

समय की कदम ताल

मुझे अपनी बढ़ती उम्र का अहसास तब होता है, जब मैं अपनी माँ और पिताजी में समय के साथ आया परिवर्तन देखती हूँ| वे अब पहले जैसे नहीं हैं, जल्दी घबरा जाते हैं, हर छोटी बात पर हमारी चिंता करते हैं| दोनों से मैं रोज़ बात करती हूँ| कई बार हम कुछ पुराने किस्से-कहानियाँ छेड़ते हैं| चेन्नई में बिताए दिनों को याद करते हुए लगता है कि मैं एक आधी शताब्दी पीछे छोड़ आई हूँ|

अभी पिछले पखवाड़े मेरी एक बहुत प्रिय सहेली की माँ का निधन हो गया| इस खबर से मन बहुत विचलित रहा| पुरानी यादों की बाढ़ सी मन में आती रही| जब मैं चेन्नई से 'ग्रेजुएशन' कर रही थी तो इस सहेली के घर मेरा खूब आना जाना था| उन दिनों की यादें मन में अभी तक ताज़ा हैं जिसका आंटी एक बड़ा हिस्सा हैं| आंटी मुझसे तमिल में बात करती थी और मैं उन्हें अपना उत्तर टूटी-फूटी तमिल और भाव-भंगिमाओं के साथ देती थी| आंटी मुझे प्यार से ‘कन्ना’ कहती जिसका अर्थ होता है "आँखों का तारा"| दक्षिण भारतीय व्यंजन बनाने में आंटी अत्यंत दक्ष थीं| कितनी ही प्रकार की इडलियाँ और उतनी ही तरह की चटनियों का मैंने उनकी बदौलत आनंद लिया| घर के प्रांगण में वे बहुत सुंदर कोलम बनाती| कोलम का अर्थ होता है ‘रंगोली’| चावल के आटे का प्रयोग कर वे बहुत ही सहजता से कठिन कलाकृतियाँ बनाती, वह भी मुस्कराते हुए|

मैं शादी के बाद चेन्नई से चली आई परन्तु हर साल आंटी के लिए एक साड़ी 'कुरियर' करती थी| पार्सल मिलते ही आंटी का फ़ोन आता और वे हमेशा कहती कि,"क्यों पैसा व्यर्थ करती हो?" कई सालों तक यह सिलसिला चलता रहा, पर धीरे-धीरे कुरियर करने का अंतराल बढ़ता गया| इसका कारण व्यस्तता के साथ टालमटोल करने की प्रवृत्ति रही होगी| इधर दो-तीन सालों से मैं साड़ी नहीं भेज पाई| शायद 25 सालों में आंटी की यादें धूमिल हो चुकी थीं| पता नहीं..... परन्तु इस बात का मलाल मुझे सदैव रहेगा, एक सालाना रस्म जो मैंने प्रारम्भ की थी, उसका मैंने निर्वाह नहीं किया|

उस सुबह जब मेरी सहेली ने मुझे बताया कि वे आई.सी.यू में हैं तो शोकाकुल मन में अनगिनत बार आंटी का ख्याल आता रहा| समय के कदमताल की आवाज़ बड़ी भयावह लगी| 'देवी जयराम', एक सरल, दयामयी व्यक्तित्व वाली ये महिला, जीवंत उदाहरण है कि प्यार का इज़हार सचमुच भाषा के परे है|

-श्रीमती ऋचा जोशी पंत (जीव विज्ञान विभाग)

वैल्हम के नए परिंदे

नीलम श्रीवास्तव
बास्केटबॉल कोच

लखबीर
फ्रेंच विभाग

डॉ. लिमिशी
चिकित्सा अधिकारी

वंदना कपूर
मेट्रन (ऑरियल)

अर्चना भट्ट
हिंदी विभाग

अनुराधा खत्री
नर्सिंग अधिकारी

सारिका दुबे
गृह-विज्ञान विभाग

आज कुछ तूफानी करते हैं!

रविवार का दिन था| कुछ मस्ती करने की धुन में मैंने अपने तीन मित्रों के साथ बाहर साइकिल चलाने का निश्चय किया| साइकिल चलाते हुए हम उस सुनसान घर के सामने आ खड़े हुए जो आग लगने के कारण नष्ट हो चुका था| अफ़वाह थी कि उस घर की बेटी की आत्मा अभी भी वहाँ घूमा करती थी| अंदर प्रवेश करने में डर तो बहुत लग रहा था परंतु उस घर का रहस्य हमें अपनी तरफ आकर्षित कर रहा था| मैं और मेरी एक सहेली जैसे-तैसे बाहर के बड़े दरवाजे का सहारा लेकर दीवार पर चढ़ गए| उसके बाद हमने देखा कि दीवार के उस पार बहुत बिल्लियाँ थीं| उनके डर से हम भीगी-बिल्लियाँ बनी और वहाँ तीन घंटे तक बैठी रहीं| थोड़ी देर बाद हिम्मत जुटाकर हम काँच के टुकड़े और सूखे कचरे से भरे बरामदे में आ पहुँचे| सहसा हमारे सामने एक काली बिल्ली आ गयी| हम ज़ोर से चिल्लाए और वापस दीवार पर जा बैठे| मैंने निडर होकर अकेले अंदर प्रवेश करने की सोची| घर के अंदर, सामने ही फर्श पर दो बदबूदार आदमी लेटे हुए थे| एक की अचानक आँख खुली और उसने मुझे देख लिया| दोनों मुझे पकड़ने उठ ही रहे थे कि मैं वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गई| मेरी सहेली और मैंने तुरंत दीवार फाँदी और अपने मित्रों के साथ हवा से बातें करते हुए फरार हो गई|

भूत से मिलने का फितूर अब ठंडा पड़ गया था और घर आकर सोचा कि जान बची तो लाखों पाये, लौट के बुद्धू घर को आए|

-आर्या शर्मा (कक्षा 6)

आवाज़ उठाओ

कोरोना, अब डराने लगा है...
जो कल नंबर थे, वह आज नाम बन गए हैं।

जब दादी के लिए अस्पताल में बिस्तर न मिल सका,
तब फूट-फूट कर रोया और जान पाया,
जब उसी अस्पताल के बगल से एक चुनाव-रैली निकली,
तब गुस्सा आया, बहुत गुस्सा आया,
और तब समझ में आया कि
इन नेताओं को लोगों की नहीं, केवल वोटों की चिंता है।

लगा था कि हम वैश्विक महामारी से गुज़र रहे हैं,
इसलिए हैरान थी जब लाखों लोगों को नदी में डुबकी लेते देखा,
जब मैंने केंद्रीय सरकार को 'कुम्भ मेले' के लिए
ना ही केवल इजाज़त, मगर प्रोत्साहन भी देते देखा।
फिर याद आया कि वे राजनेता हैं...
उन्हें केवल अपनी सत्ता प्यारी है, जनता नहीं।

लगने लगा था कि भारत के लिए कोई उम्मीद नहीं बची,
तब अचानक सोशल मीडिया के द्वारा मैंने देखा,
कोई गरीबों में खाना बाँट रहा था, तो कोई मरीज़ों में दवाएँ ,
और फिर याद आया कि भारत उन नेताओं के हाथों में नहीं,
भारत तो अपनी जनता के हाथों में है,
जिस कारण भारत अब तक जीवित है।

मगर ऐसा और कितने दिन चल पाएगा?
कितने दिन भारत का गरीब इस प्रकार जीवित रह पाएगा?
इस लिए विनय है युवा पीढ़ी से,
कि अपनी आवाज़ उठाओ,
जिससे वे नेता सबसे ज़्यादा डरते हैं,
और मुश्किल सवालों का जवाब माँगो,
क्योंकि अब 'भारत' तुम्हारे हाथों में है,
और 'भारत' को जीवित रखना अब हमारी ज़िम्मेदारी है।

-अदिति भोजनगरवाला (कक्षा 12)

नारी हूँ मैं

क्या हूँ? मैं कौन हूँ?
यही सवाल करती हूँ मैं|
लड़की हूँ, लाचार हूँ,
मजबूर-बेचारी हूँ,
यही जवाब सुनती हूँ मैं।
बड़ी हुई, और
समाज की रस्मों को पहचाना,
अपने ही सवाल का जवाब,
तब मैंने खुद में ही जाना|
लाचार नहीं, मजबूर नहीं,
मैं एक धधकती चिंगारी हूँ,
छेड़ो मत, जल जाओगे,
मैं, दुर्गा और काली हूँ,
परिवार का सम्मान,
माँ-बाप का अभिमान हूँ,
सृष्टि के सब रूपों में
सबसे प्यारा रूप हूँ|
जिसको माँ ने
बहुत प्यार से है पाला,
हाँ! मैं उस माँ की बेटी हूँ।
सृष्टि की उत्पत्ति का
प्रारंभिक बीज हूँ मैं
नए-नए रिश्तों को
बनाने वाली रीत हूँ मैं,
रिश्तों को प्यार में
बांधने वाली डोर हूँ मैं,
जिसको हर मुश्किल में संभाला,
उस पिता का विश्वास हूँ मैं|

-शाम्भवी चंद्रा (कक्षा 9)

ब्लैक लाइव्स मैटर

मैं एक शाम अपने कमरे में बैठकर कुछ काम कर रही थी और मेरा भाई मुझे एक गाना सुनाकर परेशान कर रहा था। गाने के बोल थे- "हम काले हैं तो क्या हुआ दिलवाले हैं, हम तेरे, तेरे, तेरे चाहने वाले हैं"। अचानक "जॉर्ज फ्लोएड", "आई कांट ब्रीद", "श्वेत-अश्वेत", "ब्लैक लाइव्स मैटर" जैसे शब्द मस्तिष्क में उथल-पुथल मचाने लगे। 25 मई 2020, मिनीपोलिस (यूनाइटेड स्टेट्स) में एक 46 वर्षीय व्यक्ति को अपनी जान सिर्फ इसलिए गँवानी पड़ी क्योंकि वह अश्वेत था और 'डेरेक चाउविन',एक पुलिस अफसर को लगा कि इस बर्बरता को हर बार की तरह, दबा दिया जाएगा क्योंकि वह श्वेत है, परंतु इस बार बगावत हुई और अग्नि की तरह प्रचंड रूप से भड़क गई। यह मामला पूरी तरह से 'नस्लीय' भेदभाव पर आधारित था। हम इस तरह की खबरें गाहे-बगाहे सुनते हैं और बहुत भावुक हुए तो अपनी 'इंस्टाग्राम' की स्टोरी पर डाल देते हैं। क्या हमने वाकई में इस 'नस्लीय' भेद भाव की आधारभूत सामाजिक संरचना को समझा है? क्या अश्वेत होना गुनाह है? क्या त्वचा का रंग हमारे अधिकारों तथा उससे वंचित होने का पैमाना है? क्या किसी को भी अश्वेत बहन, बीवी या बेटी की इज्जत पर हाथ डालने की आज़ादी है? मुझे कई बार लगता है कि क्या वाकई मनुष्य, मनुष्य कहलाने के लायक है? नहीं...। इस तरह की घटनाएँ मानवता को शर्मसार करने वाली हैं, परंतु 'जूलियन हैम्पटन मॉर्गन' जैसी श्वेत महिलाएँ इस आंदोलन में सूरज की किरण बनकर अपनी जाति को शर्मिंदा करने वाले लोगों के खिलाफ जाकर अश्वेत लोगों के हक के लिए लड़ाई करते हुए नज़र आती है। इस प्रकार हमारे मन में मनुष्यता के बचे रहने की उम्मीद जागती है। उनका आना यह दर्शाता है कि अभी अंधेर नगरी में रोशनी आने की गुंजाइश है।

-वंशिका सिंह और वंशिका अग्रवाल (कक्षा 10)

वैल्हम की प्रवेश परीक्षा

कुछ महीने पहले मैं एक छोटी सी बच्ची थी,
गुड़ियों से खेलती, तितलियाँ पकड़ती, जिंदगी बड़ी अच्छी थी|
लेकिन अचानक सबको लगने लगा कि मैं हो गई बड़ी,
कोई जादू न हुआ, वैल्हम की परीक्षा सर पर आ हुई खड़ी|
सारा घर मुझे न जाने क्या-क्या समझाने लगा,
मेरा बचपन कही खो जाने लगा...
गणित, हिंदी, अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान मुझे डराने लगा,
हर वक्त पढ़ाई, पढ़ाई और पढ़ाई का भय सताने लगा|
पिज़्ज़ा, बर्गर, आईसक्रीम बेस्वाद लगने लगी
आई फिर परीक्षा की घड़ी, मन में हलचल होने लगी|
अपने जैसे बच्चों का हौसला देख, मन को हुई खुशी|
परीक्षा देकर घर पहुँची तो माँ ने लगा दी प्रश्नों की झड़ी,
"पहले प्यार तो कर लो"....सोचने लगी दरवाज़े पर खड़ी-खड़ी|
आया परीक्षा-परिणाम, उड़ने लगी आसमान में बिना जादू के छड़ी|
मैं बन गई वैल्हमाईट, खुशियाँ हुई कई गुणी,
मेहनत का फल मीठा होता है, आया अब समझ,
कोरोना अब तू वापस जा, न बन नासमझ|
मुझे वैल्हम जाना है, सबके साथ समय बिताना है,
और अपने सपनों को हकीक़त बनाना है|

-आद्या (कक्षा 6)

आत्ममंथन

जब ज़िंदा रहना, एक जंग लगे ,
तब किस्मत को, कोसना नहीं,
यह कर्म तेरे और मेरे ही हैं,
इसमें ऊपर वाले का कोई दोष नहीं|

कुदरत के हर काम में,
हम जब अपनी नासमझी दिखाते हैं,
कुदरत क्यों ना हो नाराज़?
जब हम स्वार्थी बन जाते है!

पर क्या हम इस सीख को वाकई,
अपनी आदत बनाएंगे?
क्या कोरोना के इस प्रकोप के बाद भी,
स्वच्छ रहना सीख पाएँगे?
अगर सीख गए तो अच्छा ही है,
वरना फिर पछताएंगे,
क्योंकि खुदा ने भी अब सोच लिया है,
हमें अपना आईना दिखाएंगे|

ऐ मानव! अब ज़िद छोड़ दे अपनी,
यही दुआ मैं करती हूँ|
अपनी गलतियों से ले सीख,
अपनी आदतों को कर ले ठीक|
आने वाली पीढ़ियों को नई दिशा दें,
मानवता को नया मान दें !

-ध्वनि गोयल (कक्षा 12)

घूमता आईना

"संदेशे आते हैं, बड़ा तड़पाते हैं| तो चिट्ठी आती है, वो पूछी जाती है|
कि घर कब आओगे, कि तुम बिन ये घर सूना-सूना है|"
सुबह इस मधुर गीत की पंक्तियों के साथ आँखें खुली....पर न जाने क्यों मन बहुत बेचैन हो गया| इतना खूबसूरत गीत, इतनी उम्दा धुन, कमाल की गायकी और..... फिर भी इतनी उदासी| मन इस गीत के साथ वर्तमान परिस्थितियों तथा भविष्य के गहरे सागर में गोते खाने लगा| 21वीं सदी के प्रगतिशील मानव होने का एहसास मन को कहीं भिगोने लगा| चाहे चिट्ठियाँ, संदेशे, ई-मेल, वॉटसएप्प मैसेजिस एक-दूसरे के साथ दूरियाँ कम करने लगे परंतु क्या आज जब मानवता अपने विनाश के कगार पर खड़ी है, जीवन के लिए संघर्षरत है, एक-दूसरे से दूर रहने के लिए विवश है...तो क्या ये तकनीकी साधन हमें कुछ राहत दे सकते है? नहीं.... आज मनुष्य एक-दूसरे की छोटी-छोटी खुशियाँ ही नहीं अपितु बड़े-बड़े दुखों को भी साझा करने का मानवीय गुण खो चुका है| हम वाकई किसी महाप्रलय के प्रारंभ होने का इंतज़ार कर रहे हैं या मनु की बड़ी सी नाव पर हमारी सवारी शुरू हो चुकी है| समय को बाँधा नहीं जा सकता पर समय को ख़ूबसूरती से जीया जा सकता है परन्तु इसी समय की चेतावनी को नज़रअंदाज़ कर दिया तो एक दिन विश्व की पुरानी संस्कृतियों के अवशेषों की तरह ही याद किए जाओगे और मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है, इसी दंभ के हाथों मारे जाओगे|
"गुज़रते हुए पलों को गुजरने से रोक तो ना सके,
पर खुद गुज़र जाएँ, उससे पहले गुज़रे पलों को जी तो लें|"

- श्रीमती अस्मिता (हिंदी विभाग)

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेह...

'ब्रैंड्स' का मोहजाल

बड़े-बूढ़े कह गए हैं कि यदि समय को पकड़ना है तो आगे से ही पकड़ो क्योंकि पीछे से उसे पकड़ना तो ग्यारह देशों की पुलिस के भी बस की बात नहीं है। पिछले साल मैंने भी समय को आगे से पकड़ने की सोची। सर्दियों की 'सेल' आते ही मन में ख़ुशी की लहर उठने लगी। बड़े-बड़े 'ब्रैंड्स', बड़े-बड़े वायदे करने लगे।

पिछले साल कोरोना नाम की यह महामारी बस नाम की ही थी और अख़बार बस चीन के ही क़िस्से सुना रहे थे, तब मैंने मॉल जाने का निश्चय किया। जब मैं गाड़ी से उतरी, मेरी आँखों के सामने चमकती हुई घड़ियाँ एवं रंग-बिरंगे कपड़े छाने लगे और मैं उत्साहित हो दौड़ी, लगा जैसे पैरों में पंख लग गए हैं।

मॉल में प्रवेश करते ही मेरी मनपसंद दुकान ने मेरा अभिवादन किया। दुकान में मुझे जो भी नज़र आ रहा था, मेरा मन कर रहा था कि मैं सब ख़रीद लूँ। लग रहा था मानो पूरी कायनात ने मेरे लिए खूबसूरत जूते, कपड़े तथा गहनों को एकत्रित कर मुझे भरमाने की साज़िश की हो। बिलिंग के समय, रसीद की बढ़ती लम्बाई देखकर मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा था, पर मन में यह संतुष्टि थी कि मैंने समय को आगे से पकड़ लिया है। आख़िरकार 'समय ही तो पैसा है'।

अब जब मैं उन चकाचक कपड़ों को अलमारी में सजे हुए देखती हूँ, तब मुझे उन्हें देखकर अपनी बुद्धिमत्ता की नहीं बल्कि अपनी बेवक़ूफ़ी की झलक दिखती है। ऐसा लगता है मानो मेरे रेशमी कपड़े मुझे अपनी मधुर आवाज़ में पुकार रहे हैं और जूते करुण स्वर में पहनने का आग्रह कर रहे हैं। कैसे उन्हें अपने दिल का हाल बताऊँ कि घर पर रहकर मैं दिन-दूनी, रात-चौगनी हो गयी हूँ और इन कपड़ों में समाना अब सपने जैसा लगता है। पूरा दिन नाइट सूट और चप्पल में ही बीत जाता है। बड़े-बड़े 'ब्रैंड्स' का भूत सर से उतर गया है और अब जीवन की असली ज़रूरतें समझ में आने लगी हैं।

-अवानी जिंदल (कक्षा 11)

संगीत कठिन समय को खूबसूरत बनाने का एक मनमोहक ज़रिया है। 'क्षितिज' की तरफ से कुछ मधुर गीत आप सभी लोगों को समर्पित हैं। आशा है कि कुछ क्षणों के लिए ही सही, यह आपको एक स्वप्निल दुनिया में ले जाएंगे और तनाव मुक्त करने में सहायक होंगे।

https://open.spotify.com/playlist/5uNJjyGcMWez4VBW2wuG6Y?si=1502c372d19e44d9

वैल्हम पहेली

(सभी पहेलियों का केंद्र वैल्हम की अध्यापिकाएँ हैं)

1. तितली और चिड़ियों के पीछे भागना जिनका शौक है,
   घुँघराले बाल, हँसता चेहरा, जिनकी पहचान है|
2. 'फ्लाईकैचर' हाउस की नई आन, बान और शान है|
   विद्यालय में दो-दो विषय पढ़ाती, बताओ उनका क्या नाम है?
3. पक्ष-विपक्ष के दो खेमों में छात्राओं को बँटवाती है,
   मन तथा बुद्धि के गहरे सागर में गोते लगवा, उनसे मोती चुनवाती है|
4. जल, थल, वायु, आसमान में रोज़ हमें घुमातीं है,
   'असेंबली' में परदे के पीछे रह, हम सबका आत्मविश्वास बढ़ातीं है|
5. दुबली-पतली काया है, पर अकबर, राणा सांगा पर भारी पड़ती है,
   पुराने गड़े मुर्दों को, हमें बड़ी रुचि लेकर पढ़ातीं हैं|

1.रीमा पंत, 2.रुचि अदलखा, 3.डॉ.नालंदा पांडे, 4.वत्सला दुबे, 5.डॉ. तनुश्री वर्मा

संपादकीय मंडल

<u>प्रभारी शिक्षिका:</u>
श्रीमती अस्मिता

<u>मुख्य संपादिका:</u>
अग्रीमा चौधरी

<u>विशेष आभार:</u>
देविका अग्रवाल
स्मृति त्रिवेदी
समाइरा अग्रवाल
वंशिका सिंह
मीनल जैन
दिवा बक्शी

<u>चित्रकार:</u>
ज़ीनिया सिंह
जान्हवी मारवाह
आन्या पुनीत
सुखमीत कौर